

डॉ. डी.वाई. पाटिल विद्यापीठ के छठे दीक्षांत समारोह में भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी का अभिभाषण

पुणे, महाराष्ट्र : 26.06.2015

मुझे डॉ. डी.वाई. पाटिल विद्यापीठ के छठे दीक्षांत समारोह के लिए आपके बीच उपस्थित होने का अवसर मिलने पर वास्तव में बहुत खुशी हो रही है। यह हमारे देश के उच्च शिक्षा के मानचित्र पर एक एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा केंद्रों में से एक है।

इस विद्यापीठ की स्थापना 'वभन्न वधाओं में शिक्षा के माध्यम से वकसत ज्ञानवान, सुसंस्कृत ज्ञानवान, सुसंस्कृत तथा आर्थिक रूप से गतिशील भारत को साकार' देखने के स्वप्न के साथ 2003 में की गई थी। इस संस्थान ने डॉ. डी.वाई. पाटिल तथा उच्च समर्पित शिक्षकों के प्रेरक नेतृत्व में पछले बारह वर्षों के दौरान इस उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं आप सभी को इसकी शानदार उन्नति तथा उच्च प्रतिष्ठा की दिशा में की गई प्रगति के लिए बधाई देता हूँ। यह जानकर खुशी हो रही है कि इस संस्थान को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा 'ए' श्रेणी प्रदान की गई है।

वश्वविद्यालय औपचारिक शिक्षा ढांचे में सर्वोच्च स्थान पर स्थित हैं। इसलिए यह वश्वविद्यालयों का दायित्व है कि वे समाज की प्रगति के लिए मार्गदर्शन दें। प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षशला, वक्रमशला, वल्लभी, ओदांतपुरी तथा सोमापुरा जैसे प्रख्यात वश्वविद्यालय वश्व वश्व स्तरीय शिक्षा की परंपरा का प्रतिनिधित्व करते थे। यह ज्ञानपीठें छठी सदी ईसा पूर्व से लेकर अगले अठारह सौ वर्षों तक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में वश्व शिक्षा प्रणाली पर अपना प्रभुत्व बनाए हुए थी। इस प्रणाली में बारहवीं सदी ईस्वी से पतन आरंभ हुआ। दुर्भाग्यवश, भारतीय उच्च शिक्षा को अभी उस उच्च स्थान को प्राप्त करना है।

प्रख्यात एजेंसियों द्वारा किए गए श्रेणीकरण के अनुसार कोई भी भारतीय संस्थान वश्व के सर्वोत्तम 200 वश्वविद्यालयों में शामिल नहीं है। मैं यह बात उच्च शिक्षा संस्थानों के समक्ष बार-बार कहता रहा हूँ। मेरा उद्देश्य केवल वश्वविद्यालयों को यह समझाना है कि वे श्रेणीकरण की प्रक्रिया में और व्यवस्थित पद्धति अपनाएं तथा बेहतर शैक्षणिक प्रबंधन के लिए सर्वांगीण बदलाव लाएं। ऊंचे दर्जे से उन्नति के अवसरों में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ विद्यार्थियों और शिक्षकों का मनोबल बढ़ता है। देवयो और सज्जनो,

हम अपने वश्वविद्यालयों को ज्ञान के महान केंद्रों में कैसे बदलें। सबसे पहले शिक्षा को अनुसंधान और नवान्वेषण के साथ बाधारहित तरीके से संयोजित करने की जरूरत है। शिक्षा ज्ञान का प्रचार

करती है जबक अनुसंधान नए ज्ञान का सृजन करता है। नवान्वेषण उस ज्ञान को संपदा तथा सामाजिक भलाई में बदलता है। इस दिशा में अंतर-वधात्मक अनुसंधान तथा स्नातक स्तर पर अनुसंधान को बढ़ावा देना, सहयोगात्मक अनुसंधान तथा संयुक्त अनुसंधान पत्रों को प्रोत्साहन देना तथा मेधावी वद्यार्थियों को अनुसंधान के क्षेत्र में आने के लए प्रोत्साहित करना जैसे प्रयासों की जरूरत है। इस वद्यपीठ में आरंभ से ही अनुसंधान पर जोर दिया जा रहा है। मुझे यह जानकर खुशी हो रही है क यहां वर्ष 2009 में सभी वशेषज्ञताओं में पीएचडी कार्यक्रम शुरू कए गए थे तथा आज 22 पीएचडी उपाधयां प्रदान की जा रही हैं।

नवान्वेषी वचारों को बढ़ावा देने पर खास ध्यान दिया जाना जरूरी है। आम आदमी के लए उपयोगी उपयोगी व्यवहार्य उत्पादों के वकास के लए जमीनी नवान्वेषकों के कौशल पर नजर रखे जाने की जरूरत है। अकादमक समुदाय तथा नवान्वेषकों के बीच सेतु का कार्य करने के लए कई केंद्रीय केंद्रीय संस्थानों में नवान्वेषण क्लबों की स्थापना की गई है। मैं चाहूंगा क हमारे निजी संस्थानों में में भी इसी तरह के मंचों की स्थापना हो।

मत्रो,

अकादमक संस्थानों में बहुआयामी बदलावों की जरूरत है। अच्छे स्तर के संकाय को सुनिश्चित कया जाना चाहिए। संकाय द्वारा शक्षा को कारगर ढंग से प्रदान करने के लए सूचना एवं संचार प्रौद्योगकी की सहायता से अद्यतन शक्षा पद्धति का प्रयोग कया जाना चाहिए। संकाय को पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों और संगोष्ठियों में भाग लेते हुए वषय के अपने ज्ञान को भी उन्नत करना चाहिए। संस्थानों को अनुसंधान साझीदारी तथा पाठ्यक्रम सामग्री और वषय वशेषज्ञों के आदान-आदान-प्रदान के लए अन्य संस्थानों के साथ तालमेल रखना चाहिए। संस्थानों को परियोजनाओं, पाठ्यक्रम डजायन तथा इंटरर्नशप कार्यक्रमों में मार्गदर्शन के लए उद्योग के साथ नेटवर्क भी स्थापत करना चाहिए।

हमारे वशवद्यालय सामाजिक-आर्थक वकास के पथ-प्रदर्शक हैं। इसके शक्षण की प्रासंगकता कक्षाओं, समाज तथा देश से आगे तक पहुंचनी चाहिए। इसी के साथ उन्हें अपने उदाहरण के सामाजिक-आर्थक बदलाव भी लाने चाहिए। तेज आर्थक वकास की दिशा में सरकार द्वारा शुरू कए गए स्वच्छ भारत, आदर्श ग्राम, डिजिटल भारत तथा भारत में निर्माण जैसी पहलों में देश को उन्नत देशों की श्रेणी में पहुंचाने की क्षमता है। उनके सफल कार्यान्वयन के लए समाज के बड़े वर्ग की सहभागता जरूरी है। हमारी शक्षा, प्रशक्षण, अनुसंधान तथा नवान्वेषण को इन राष्ट्रीय उद्देश्यों उद्देश्यों में योगदान देना होगा।

देवयो और सज्जनो,

हमारे शिक्षा मॉडल से न केवल मस्तिष्क विकसित होना चाहिए वरन् इससे सकारात्मक मानसकता मानसकता भी बननी चाहिए। किसी भी वद्यार्थी की क्षमता का निर्माण तथा उसके दृष्टिकोण का निर्माण साथ-साथ होना चाहिए। सृजनात्मक मानसकता तथा सकारात्मक नजरिया मलकर कुपोषण, वहनीय स्वास्थ्य सेवा, कारगर ऊर्जा उपयोग, पेयजल तथा स्वच्छता जैसी समाज को परेशान करने वाली समस्याओं के समाधान को खोजने में सहायता दे सकते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान की प्राप्ति और सक्षम मानवशक्ति का सृजन ही नहीं है वृहत स्तर पर शिक्षा राष्ट्र निर्माण करती है। सूक्ष्म स्तर पर इसे वद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना चाहिए। इस पावन अवसर पर मैं चाणक्य नीति शास्त्र से एक संस्कृत सुभाषित को उद्धृत करना चाहूंगा-

न चौर हार्यम न च राजहार्यम

न भ्रात्रभाज्यम न च भारकारी

व्यये कृते वर्धते नित्यं

वद्या धनं सर्वे धनं प्रधानम्

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। मैं एक बार फर से सभी वद्यार्थियों को उनकी सफलता के लए बधाई देता हूँ। मैं वद्यापीठ को भी उज्ज्वल भवष्य के लए शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद,

जय हिंद!